आज का युवा

आज का युवा जोशीला, व्यस्त, रखे अकड़ू पना,
समझे अपने को ज्यादा समझदार, हठीला, तना,
दो चेहरे रखे अपने साथ, समाज से ये डरता हुआ,
चिंताओं के मकड़जाल में फंसा अनसुलझा हुआ

बाहरी चकाचौंध से लबालब, परिवार से उखड़ा रहे दूर,
चार दिन में ही होना चाहे, झटपट जग में खूब मशहूर,
सपनों की दुनिया विशाल, पर ये मेहनत से कतराता,
भेड़चाल, खींचातानी एक दूजे के पीछे दौड़ता भागता ।

इनमें से जो संभल गए, उन्होंने जिम्मेदारियां उठा ली,
उम्र से पहले जिंदगी अपनी बोझिल, नीरस बना ली,
समय नियोजन की कशमकश अधूरी इच्छाएं भी संग,
शारीरिक, मानसिक परेशानियां लिए लड़ रहे ये जंग ।

कुछ में ही बची है आज खुशबू वो पुराने संस्कारों की,
कुछ ने राह पकड़ी कभी न लौटने वाली रफ्तारों की,
कुछ हो गए हैं भ्रमित अनगिनत कल्पनाओं में जा डुबे,
कुछ हो गए विस्मित परिस्थितियों से पूरे न हुए मंसूबे ।

भ्रष्टाचार की कालिख ने युवाओं की कमर ही तोड़ दी,
रोजगार की कमी से दम तोड़ राह उसूलों की छोड़ दी,
तेज विकास हर कोई चाहता मगर अज्ञानता है व्याप्त,
तूफ़ानी बवंडर में ÷आनंद÷ भीतरी शक्ति हो रही समाप्त ।

सत्य को नजर अदांज किए भाग रही जिंदगी की गाड़ी,
क्या हो पायेगा राष्ट्र का विकास जब युवा ही हो अनाड़ी,
एकजुट हो इस ताकत को सही ओर आगे बढ़ाना होगा,
उचित मार्गदर्शन कर देश को समृद्धशाली बनाना होगा ।

- मोनिका डागा
आनंद, चेन्नई, तमिलनाडु

दृश्यपट टेलीविजन

देश के प्रत्येक गृह में मिलेगा
मनोरंजन के साधन
समाचार फिल्म धारावाहिक दिखाएँ
ऐसे दृश्यपट टेलीविजन।
जिसमे लोग अधिक समय बिताते
तरह-तरह के ज्ञान पाते।
पर देश के लिए दु:खद है
इस ज्ञान की परिधि में
अज्ञानता को परोसा जा रहा है
भर-भर अंधविश्वास और द्वेष से
राष्ट्र निर्माण को तोड़ा जा रहा है।
काल्पनिक बातें,चमत्कारिक चित्रण
देश को पीछे ढकेल रही है
नशा-जुआँ में लिप्त युवा पीढ़ी
शासन-प्रशासन नही कस नकेल रही है।
वैचारिक,वैज्ञानिक दृष्टिकोण को
प्रधानता कोई नहीं देते हैं
दुर्बुद्धि और तर्कहीन बातों से
अपनी खूब नैया खेते है।
जनसमस्या और जनकल्याण को
ताक में रखने की खराबी है।
बेफिजूल तथ्यों को सुर्खियाँ बनाकर
सत का चोला ओढ़ते नकाबी है।।

चन्द्रकांत खुंटे
क्रांति%जांजगीर-चाम्पा
(छत्तीसगढ़)

स्वाभिमान में झलक रही है

सफलता की अपार खुशी ।
देख उसको खिलखिला रही
माँ सुमति और प्रिंशी ।।
नटखट बहुत है हमारा स्वाभिमान ।
सफलता प्राप्त कर रखा निज स्वाभिमान ।
सबको आश्चर्यचकित कर बता दिया
सफल भी हो सकता है शैतान स्वाभिमान।।
अर्द्धांगिनी हमारी सुमति को
अब तक नहीं हो रहा विस्वास।
श्रेष्ठतम अंकों से उत्तीर्ण हुआ है
आज लाडला सुमति ज्ञान प्रकाश ।।

ज्ञान प्रकाश गौड़
देवगांव सफीपुर
उन्नाव उत्तर प्रदेश
9936385739

करौ खास बनौ आस

रद्दा खुद बन जावत,तुम चले के प्रयास करौ।
दुविधा मा मत फँसौ,मत काकरो उपहास करौ।।
भाग ला रोज कोसत,तुम कायर मत बनौ।
बुद्धि अउ शक्ति मा,तुम भाग मानी बनौ।।
मुरझाए रूख राई बर,तुम बरस बन पावस बनौ।
समाज अउ राष्ट्र मा सुग्घर,तुम बसंत बहार बनौ।।

बाधा अड़चन जो हो,तुम संघर्ष खूब करौ।
हरदम हास के सब, परिणाम स्वीकार करौ।।

अपमान तृष्कार से भला,मौत ला गला लगाओ।
मातृभूमि प्रथम खातिर,विचार ला अपन बनाओ।।

गुमनाम न होवै जीवन,तुम अइशन काज करौ।
सब मानवता के मार्ग ला,तुम सदा साज करौ।।

लक्ष्मीनारायण सेन
खुटेरी
गरियाबंद
(छ.ग.)

कबूतर

घर के अंदर आया कबूतर
हाल-चाल बतलाया कबूतर
हम सबसे पूछा हाल कबूतर
अपनी चाल बतलाया कबूतर।

खाना भी ना खाया कबूतर
पानी भी ना पिया कबूतर
गुटुर-गुटुर कुछ कहा कबूतर
फिर धीमे उड़ गया कबूतर।

सामने छत पर बैठा कबूतर
आँख घुमाया गोल कबूतर
फिर गुटुर-गुटुर कुछ कहा कबूतर
दर्द बहुत था कहा कबूतर।

शायद पंख में चोट लगी थी
रोकर गाकर बतलाया कबूतर
मोनू को उसपर दया आ गयी
समझ इसे खुश हुआ कबूतर।

फिर कल आऊँगा कहा कबूतर
दाने चुगूँगा कहा कबूतर
दूर बैठ मुस्काया कबूतर
चला जाता हूँ... गाया कबूतर।

--अनिल कुमार
मिश्र,राँची,झारखंड।

सिर्फ मैं....

अब सिर्फ मैं हूँ
तुम नहीं हो
है तो थोड़ी खुशबू
जो शायद तुम्हारे बदन की है
जो बिखरी पड़ी है

रसोईघर से लेकर शयनकक्ष तक
थोड़ी छत पर भी
जहाँ हर सुबह तुम
आकर बैठा करती थी
अपने गीले बालों को सुखाने के लिये

बची हैं कुछ यादें भी
थोड़ी बिस्तर की सिलवटों में
थोड़ी तकिये में फंसे कुछ स्याह बालों में

थोड़ी उन टूटी चूड़ियों में
जिसे सहेज कर रखा है मैंने
ठीक उसी जगह
जिस जगह रखा करती थी तुम
कभी अपनी साबूत चूड़ियाँ

और इस थोड़े के साथ
जी रहा हूँ मैं
या शायद जीने की कोशिश कर रहा हूँ
पूरा का पूरा जीवन
एक बार फिर से.....

ब्रह्मदेव बन्धु
संपर्क-हवेली खड़गपुर, मुंगेर
(बिहार)
पिन-
811213

आदमी बताओ

फूल बताओ
तुम कैसे
महकते रहते हो

सूरज बताओ
तुम कैसे
धूप की हंसी
हंसते रहते हो

चांद बताओ
तुम कैसे
मुस्काते रहते हो

लताओं बताओ
तुम कैसे
वृक्ष का आलिंगन
करती रहती हो

आदमी बताओ
तुम क्यों हमेशा
चिंता में
डूबे रहते हो ?

-दुर्गाप्रसाद झाला .

मिशाल कहाँ माँ

तेरी और मिशाल कहाँ माँ।
कोई इसके जैसा होता।
कोई उसके जैसा होता।
हो जाये जो तेरे जैसा
किसकी हुई मजाल यहाँ माँ।।
तेरी

करुणा ममता की तू मूरत।
तेरे आगे फ़ीकी लगती
हमको तो भगवान की सूरत।
उसने तेरी रचना करके ।
कैसा यहाँ कमाल किया माँ।।
तेरी

माँ तेरे आँचल में अमृत
उससे ही सृष्टि में रंगत।
सिंचित कर धरती का कण-कण
तूने इसे निहाल किया माँ।। तेरी

दिव्य तेरे आँचल की छाया।
सबने ही उसमें सुख पाया।
जो भी वंचित रहा जगत में
उसने सदा मलाल किया माँ।।
तेरी

जीवन के तपते मरुस्थल में।
जो भी मूर्छित हुआ डगर में।
संजीवनी शक्ति दे अपनी
तूने तुरत सँभाल लिया माँ।।
तेरी

डॉ सत्यप्रकाश मिश्र
नैनीताल

चंद !

खुशियों की तलाश में,
यह कहां आ गए हैं।
पांव जल रहे हैं
सर पर छांव नहीं,
धूप ही धूप है।
ठिठक जाता है मन
झुलस गया है तन
आंखों भी सुख गई हैं।
दर्द में बूंद
आंसू न आए
हुआ,हफ्ता,
मैं,
रेगिस्तान में खो गया हूं।
पछता रहा हूं
कोसता उस घड़ी को
जब खयाल आया
मैं भी

कामासूत बनूं
परदेसी कहलाऊं।
अब फसा मझधार में,
न आगे है कुआं,
न पीछे है खाईं..
फिर भी गर्त में
गिर रहा हूं।
हर तरफ फैली

जीभ निकाले
मुख खोले
रेगिस्तान मुझे ही बुलाए।
नीचे ! रेत की भट्ठी
ऊपर ! धूप की गर्मी
दोनों मिल,
मुझ मुर्गे को पकाए।
आज दावत है
रेगिस्तान में
हवा संग मिल रेत
चील...
कौआ..
और गिद्ध को बुलाए !

गुड़िया
तिवारी,बिहार

जग में नाम कमाया

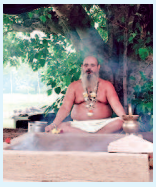

पहली राखी जिसको बाँधी, रहता था बन मम छाया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में है नाम कमाया
संग सदा मैं खेली उसके,जब से था होश सँभाला
थी मैं उसकी बहन दुलारी,पर दुश्मन का था ज्वाला
भरी भीड़ का मेरे बल था , उसमें था गर्व समाया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में है नाम कमाया
रहा हमेशा मन का राजा, नहीं किसी की सहता था
साहस का सच्चा था सागर,बहुत हिलोरें भरता था
था वो उनका बड़ा मसीहा,जो उसके द्वारे आया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में है नाम कमाया
लिखा भाग्य में वो होना था, जागा वैरागी कैसे
ऐसे उसने जग त्याग दिया,जीव ब्रह्म मिलते जैसे
करें आरती मंगल पूजा, मैया ने भोग लगाया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में नाम कमाया
उनके साथी गुरु भाई ने, मुझसे की मीठी बोली
मुझको समझो अपना भाई,मत समझो बहन अकेली
बहुत बड़ा वह सतकर्मी था,शुभ सद्गति उत्तम पाया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में नाम कमाया
धन्य हुआ है संत समागम, धन्य मातु की कोख हुई
तरी सात पीढ़ीयाँ प्यारे, धन्य त्याग की पूज्य भुई
मुनि हरदेव नमन स्वीकारें,सब कुछ प्रभु की है माया
बड़ा महात्मा था वो प्यारे, जग में है नाम कमाया

डॉ. कल्पना
भदौरिया स्वप्निल
लखनऊ
उत्तरप्रदेश

परीक्षा परिणाम का दिन

आज का दिन है बड़ा निराला,
किसी ने हँसकर खुशियाँ बटोरी,
किसी ने आँसू सदा संभाला।
कहीं पटाखे फूट रहे हैं,
कहीं सन्नाटा छाया है,
किसी को मेहनत ने चमकाया,
कोई फिर उम्मीदों में आया है।
अंकों का ये खेल निराला,
कभी हंसाए, कभी रुलाए,
पर जीवन की असली दौड़ में,
सिर्फ हौसले काम आए।
जो जीते, वे आगे बढ़ें,
जो हारे, वे फिर संभल जाएं,
असली इम्तिहान है आगे,
चलो, नई राह बनाएं!

मुकेश कुमार बिस्सा
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा डाबला जैसलमेर

प्रकृति के प्रहरी

धरती की गोद में जो हरियाली सजाते हैं,
अनोप भाम्बू और दिनेश चौहान कहलाते हैं।
वन्य जीवों का प्रेम है जिनकी पहचान,
प्रकृति की सेवा में जिनका है मान।
बंबोर की माटी में अनोप का संग है,
हर वृक्ष की छाया में प्रेम का रंग है।
रामदेवरा की रेत में दिनेश की बात,
जहाँ पर्यावरण को मिले नई सौगात।
पंछियों की चहचहाहट में है दोनों की जान,
धरती का आंचल हो सदा हरा-भरा जहान।
हर पत्ता बोले एक नई जुबान,
साँसों में घुलती रहे हरियाली की शान।
जहाँ हवा बहती हो खुशबू लिए,
प्रकृति का प्यार दोनों ने जिया।
अनोप भाम्बू, दिनेश चौहान का ये प्रण,
धरती रहे सुंदर, ये सेवा रहे अनंत।

— डॉक्टर
बीएल सैनी
श्रीमाधोपुर सीकर
राजस्थान

उसके शहर में

वो आई उसके शहर में
जहा उसके आने का इंतज़ार
वो करता रहा
ना जाने कई वर्षो तक
उस शहर के जर्रे जर्रे में
छिपा है उसका इंतज़ार
ना जाने कई वर्षो का
और इतने इंतज़ार के बाद
वो आई भी
पर पूरा ना हो सका
उसका इंतज़ार
क्योंकि अब वो आई
एक अजनबी की तरह
एक शहर में होते हुए
वो अनजान हैं एक दुसरे के लिए
अजनबी है एक दूसरे लिए

पूजा सिंह
बैरकपुर
(पश्चिम बंगाल)

सौरव हत्याकांड

धनाक्षरी
पत्थर का दिल पाया मन नहीं धबराया ।
हाथ नहीं काँपे जब उसको वो मारी थी ।।
सोलह टुकड़े करे ड्रम में उसे हैं भरे ।
कलयुग की कुलक्षणी कैसी वो नारी थी ।।
सीमेंट घोल लगाया मन नहीं धबराया
वो भी दुश्मन बनें जो जिनकी दुलारी थी ।।
सौरव को मिले न्याय कितने हुए अन्याय ।
जान ली है उसने ही उसकी जो प्यारी थी ।।

राखी उपासना कौशिक (हंगामा द्विवन्स) धामपुर बिजनौर
8755160545

भ्रम की गुन्जाईश न हो

कल करेंगे यह सुकून पल भर की है,
इसकी वजह से ही,
तकलीफ होती है।
समन्दर पार करने वाले लोगों को,

इसकी वजह जानना जरूरी है,
अक्सर लोगों को,
भ्रम से रूबरू कराने की,
काफी जरूरत होती है।

कौन जानता है कि कल क्या होगा,
सपनों को पूरा करने वाले ही,
अक्सर बदल जाते हैं।

शिखर पर पहुंचने पर,
तकलीफें काफी तेजी से बढ़ती है,
मंजिल मिल गया तो,
अपनों की तकलीफें खत्म नहीं होती है,
बस दुखों का भण्डार,
सामने नज़र आते हैं।

भ्रम एक बड़ी चुनौती है,
इसकी वजह से ही,
समस्याएं खत्म नहीं होती है।

उम्मीद है पहल में,
बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए,
इसकी अहमियत काफी रहती है।

आगे बढ़ने वाले लोगों को,
समझने की जरूरत समझनी चाहिए यहां।
यही तकलीफें खत्म करने की हिम्मत बढाएगी,
इसकी अच्छी सोहबत में,
हमेशा रहनी चाहिए यहां।

कल पर काम टालने की कोशिश,
बड़ा नुक्सान देती है।
ज्ञान दर्पण में उम्मीद बनाएं रखने में मदद करने की,
सियासत से रूबरू कराने की,
भरपूर कोशिश करती है।

डॉ अशोक, पटना, बिहार।

मै नारी अबला आबरू कहलाई जग माई ।

मै हि देवी शक्ति दुर्गा का रूप बतलाई जग माइ।।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ नही रे बाबा दुष्ट दरिंदा न फांसी लगाओ

मेरे हि खातिर रावण की लंका जलाई सतयुग माई।
हे भगवान अब कहा गया रे तु कलयुग माई।।

सतयुग म दुष्ट दुर्योधन दुशाशन स भी बचाई।
गलती क्या रही मेरी (कर्म) ड्झूटी कर आई ।।
बेटी है तो कल है नही रे बाबा दुष्ट दरिंदो स असुरक्षित पल है

माँ रे कोख स बचाई तूने इन दरिंदो स मै ना बच पाई ।
हे प्रभु रोइ बिलखी मेरी चीख आसमान ना गुंजाई ।।

कितना लड़ती ओर कितना मरती पहले स अबला बताई।
हवस के शिकारियो थाने माफ़ नहीं करेला साईं ।।
बेटी पढ़ेगी तो आगे बढ़ेगी नही रे बाबा दरिंदा नु फांसी चढ़ेगी तब बेटी बचेगी

मै बचाओ आओ घणी उस रात कुरुड़ाई ।
हे प्रभु कीड़ा री कुंड भोग लेती लड़की क्यू बनाई।।

हे प्रभु बिल्ख बिल्ख चीख चीख मै प्राण त्याग आई।
तु भी इन दरिंदो स कमजोर होगया रे ना करी सुनवाई।।

बेटी तो कुदरत रा अनमोल उपहार है नही रे बाबा नही चढी फांसी तो जीना दुसवार है

डॉक्टर मीमिता देबनाथ री ना सुनी पण जनता री कर सुनवाई।
दुष्ट दरिंदा लूचा राख्या न हे भगवान फांसी लगवाई।।

माँ बेटी बहन देवी दुर्गा लक्ष्मी लाडेसर री इज्जत बचाई।
क्या हो रहा हैं सोने री चिड़िया भारत देश माई।।

बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ नही रे बाबा दुष्ट दरिंदा न जिंदा जलाओ

प्रवीण दानोदिया चूरू राजस्थान

जन्मदिवस की नवीन परंपरा

म.प्र.के मुख्यमंत्री मोहन यादव का,
61 वा जन्मदिवस 25 मार्च को आवे।
धर्मनिष्ट और कर्मनिष्ट मुख्यमंत्री जी,
गौ माताओं के मध्य जन्मदिन मनावे।।
राजपुरोहित मंत्रोचार से तुलादान,
मुख्यमंत्री का अभ्यारण में करावे।
मुख्य हवन कुंड पर मंत्रोच्चारण से,
प्रदेश की समृद्धि हेतु आहूति दिलावे।।
61 किलो का गोवृत्ति केक बनाकर,,
मुख्यमंत्री से पूजन उसका करावे।
छह:हजार एक सौ लड्डू गोकाष्ट में,
गौ माताओं को प्रेम पूर्वक खिलावे।।
रघुनाथ सिंह जी स्वागत भाषण में,
समस्याओं पर उनका ध्यान दिलावे।
मुख्यमंत्री अपने भाषण में सरकार की,
गो संरक्षण हेतु प्रतिबद्धता दोहरावे।।
अंत समय में पूण्यकर्म व गौ माता,
इस जीव को स्वर्ग की ओर ले जावे।
गौ सेवा का जीवन में महत्व बताकर,
सभी को गौ भक्ति का महत्व बतावे।।
मानव को अच्छे कर्म का मिला मौका,
गौ सेवा में सब अपना ध्यान लगावे।
हर किसान गौ माताओं को पालकर,
अपने-अपने ग्राम को वृंदावन बनावे।।
सभी जनों को दी प्रेरणा वहां उन्होंने,
जिसके घर गाय वो गोपाल कहलाए।
दस गायों से अधिक अपने घर रखकर,
अपनी इस सरकार से गौ अनुदान पाए।।
एक वर्षीय गौ कथा के मुख्य यजमान,
चिमनभाई अग्रवाल की,की बहुत बढाई।
इतना सम्मान दिया वहां उन्होंने उनको,
अपनी माला खुद उन्होंने उन्हें पहनाई।।
एक वर्षीय वेद लक्षणा गौ कथा के वक्ता,
गोपालानंद जी के चरणों में शीश झुकाया।
गोभक्त महाराज के साथ गौ माताओं का,
अपने जन्म दिवस पर खुब आशीष पाया।।
आपने सालरिया गौ अभ्यारण में आकर,
जन्मदिवस मनाने की नई परंपरा चलाई।
शिवसबके साथ गौ माताओं की ओर से,
जन्मदिवस पर आपको बहुत-बहुत बधाई।।

शिवलाल
दांगी,अध्यापक
सीएम
राइज
शा.उ.उ.मा.विद्या
लय,
सुसनेर
जिला आगर
मालवा म.प्र.

नमक बनेंगे घावों पर

यूँ बार बार मत खेलो तुम,
हमारी भावनाओं से
दाग लगावो ना वीरो पर ,
झूठे झूठे दावों से

जब जब भी होती है तुलना, होत धधकते लावों से
उन वीरों ने रक्षा की है , अस्सी अस्सी घावों से

बार बार अधम बैरियों को, कुचला अपने पाँवों से
वो डरते डरते भागे थे , सांगा जैसे छावों से

और अपमान नहीं सहेंगे , झूठे झूठे दावों पर
है सौगंध माँ भवानी की , नमक बनेंगे घावों पर

सुखदेव टेलर निम्बी जोधाँ
लाडनूं, राजस्थान